SOCIAL STUDIES

Class 10th

(HISTORY)

Chapter 4: औद्योगीकरण का युग

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

संक्षेप में लिखें

प्रश्न 1. निम्नलिखित की व्याख्या करें

(क) ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए।
(ख) सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे।
(ग) सूरत बंदरगाह अठारहवीं सदी के अंत तक हाशिये पर पहुँच गया था।
(घ) ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाश्तों को नियुक्त किया था।

उत्तर (क)

(i) स्पिनिंग जेनी मशीन जेम्स हरग्रीव्ज़ ने 1764 ई. में बनाई थी।
(ii) इस मशीन से एक ही पहिया घुमाने वाला एक मजदूर एक साथ बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था।
(iii) इससे एक साथ कई धागे बनने लगे थे और मजदूरों की माँग घटने लगी।
(iv) इस मशीन के कारण ऊन काटने वाली महिलाये बेरोजगार हो गई। इसलिए महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले कर दिए ।

उत्तर (ख)

(i) सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की तरफ रुख़ करने लगे थे।
(ii) वे किसानों और कारीगरों को पैसा देते थे और उनसे अपने हिसाब से उत्पादन करवाते थे।
(iii) उस समय दुनिया में चीजों की माँग बढ़ने लगी थी।
(iv) इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों से ही उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था।
(v) नए व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे।

उत्तर (ग)

1. 1750 के दशक तक भारतीय सौदागरों के नियंत्रण वाला नेटवर्क टूट गया।
2. यूरोपीय कंपनियों ने स्थानीय राजाओं से व्यापार में कई तरह की रियायतें प्राप्त कर ली।
3. उसके बाद उन्होंने व्यापार पर इजारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिए।
4. यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी।
5. उन्होंने अपने नियंत्रण के मुंबई बंदरगाह को विकसित करना शुरू कर दिया।
6. इससे सूरत जैसे बंदरगाहों से होनेवाले निर्यात में नाटकीय कमी आई और ये बंदरगाह कमजोर पड़ गए।
7. 17वीं सदी के आखिरी सालों में सूरत बंदरगाह से होने वाला व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रुपये था।
8. 1740 के दशक तक यह गिर कर केवल 30 लाख रुपये रह गया था।
9. इस प्रकार 18वीं सदी के अंत तक सूरत बंदरगाह हाशिए पर पहुंच गया था।

उत्तर (घ)

1. 1760-65 तक भारतीय बुनकर अपना माल ऊंची बोली पर बेचते थे।
2. परन्तु 1764 के युद्ध के बाद जब ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनैतिक सत्ता स्थापित हो गई थी।
3. कंपनी व्यापार पर एकाधिकार कायम करना चाहती थी।
4. कंपनी ने बुनकरों पर पाबंदी लगा दी कि वे अपना माल कहीं और नहीं बेच सकते।
5. इन बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए कंपनी ने वेतन भोगी कर्मचारी नियुक्त किए जिन्हें गुमास्ता कहा गया।

MUKUTclasses

प्रश्न 2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे सही या गलत लिखें

(क) उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रम शक्ति का 80 प्रतिशत तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।
(ख) अठारहवीं सदी तक महीन कपड़े के अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का दबदबा था।
(ग) अमेरिकी गृहयुद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आई।
(घ) फ्लाई शटल के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर (क) गलत
(ख) सही
(ग) गलत
(घ) सही।

प्रश्न 3. आदि-औद्योगीकरण का मतलब बताएँ ।
उत्तर:- इंग्लैंड और यूरोप में फैक्टरियों की स्थापना से भी पहले ही अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था। यह उत्पादन फैक्टरियों में नहीं होता था। यह उत्पादन पारंपरिक व्यापार का गांवों में विस्तार होने से बढ़ा । बहुत सारे इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को पूर्व-औद्योगीकरण कहते हैं।

चर्चा करें

प्रश्न 1. उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों की बजाए हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?
उत्तर:- 19वीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपतियों द्वारा हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता देने के निम्नलिखित कारण थे।

1. उस समय ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी। इसलिए कम वेतन पर मजदूर मिल जाते थे। अतः उद्योगपति मशीनों की बजाए हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को ही रखते थे।
2. बहुत सारे उद्योगों में मौसम के आधार पर मांग घटती बढ़ती रहती थी वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाए मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।
3. बहुत सारे उत्पाद केवल हाथ से ही तैयार किए जा सकते थे। बाजार में अक्सर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी। इन्हें बनाने के लिए मशीनों की नहीं बल्कि इन्सानी निपुणता की जरूरत थी।
4. उच्च वर्ग के कुलीन लोग हाथों से बनी चीजों को महत्व देते थे। हाथ से बनी चीजों को परिष्कार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था। उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिजाइन भी अच्छा होता था।

प्रश्न 2. ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए क्या किया?

उत्तर:- ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय बुनकरों से सूती और रेशमी कपड़े की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए निम्न कदम उठाए।

1. कंपनी ने प्रतिस्पर्धा खत्म करने के लिए प्रबंध और नियंत्रण की एक नई व्यवस्था लागू कर दी।
2. कंपनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों और दलालों को खत्म करने की कोशिश की।
3. कंपनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने वाले वेतनभोगी कर्मचारी तैनात कर दिए जिन्हें गुमाश्ता' कहा जाता था।
4. कंपनी का माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीददारों के साथ कारोबार करने पर पाबंदी लगा दी गई।
5. बुनकरों को कर्ज देना शुरू कर दिया। जो बुनकर कर्ज लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था।

प्रश्न 3. कल्पना कीजिए कि आपको ब्रिटेन तथा कपास के इतिहास के बारे में विश्वकोश (Encyclopaedia) के लिए लेख लिखने को कहा गया है। इस अध्याय में दी गई जानकारियों के आधार पर अपना लेख लिखिए।

उत्तर:-

1. कपास औधौगिक युग का प्रतीक था। उन्नीसवीं सदी के अंत में कपास के उत्पादन में भारी बढ़ोतरी हुई।
2. 1760 में ब्रिटेन में उद्योगों के लिए 25 लाख पौंड कच्चे कपास का आयात होता था।
3. 1787 में यह आयात बढ़कर 220 लाख पौंड तक पहुँच गया।
4. आयात में यह वृद्धि उत्पादन की प्रक्रिया में बहुत सारे बदलावों का के कारण हुई थी।
5. 18वीं सदी में कई ऐसे अविष्कार हुए जिन्होंने उत्पादन प्रक्रिया के हर चरण की कुशलता बढ़ा दी।
6. प्रति मजदूर उत्पादन बढ़ गया और पहले से ज्यादा मजबूत धागों व रेशों का उत्पादन होने लगा।
7. इसके बाद रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी।
8. अब महँगी नयी मशीनें खरीदकर उन्हें कारखानों में लगाया जा सकता था।
9. कारखानों में सारी प्रक्रियाएँ एक छत के नीचे और एक मालिक के हाथों में आ गई थीं।
10. इस प्रकार कपास उद्योग ब्रिटेन के सबसे फलते-फूलते उद्योगों में से एक थे।

प्रश्न 4. पहले विश्व युद्ध के समय भारत का औद्योगिक उत्पादन क्यों बढ़ा?

उत्तर:-

1. ब्रिटिश कारखाने वहां की सेना के लिए युद्ध संबंधी उत्पादन में व्यस्त थे। जिसके कारण भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया। भारतीय बाजारों में रातों-रात देशी माल की बढ़ने लगी।
2. भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए जूट की बोरियाँ, फौजियों के लिए वर्दी के कपड़े, टेंट और चमड़े के जूते, घोड़े व खच्चर की जीन तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे।
3. नए कारखाने लगाए गए। पुराने कारखाने कई पालियों में उत्पादन होने लगा। बहुत सारे नये मजदूरों को काम मिल गया।
4. राष्ट्रवादी आंदोलनों ने भी स्वदेशी चीजों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जिससे भारतीय उद्योगों में उत्पादन बढ़ने लगा।

MUKUTclasses